Krishna Nand B.A III Hon's (2)

5

अतः परिकल्पना निर्माण में पूर्व के शोधों को एक महत्वपूर्ण स्रोत माना गया है।

(4) सच जानने की जिज्ञासा (Want to know truth) किसी घटना अथवा स्थिति के संबंध में सही तथ्य जानने की इच्छा या घटना घटित होने की यथार्थ कारण समझने की जिज्ञासा भी शोध-परिकल्पना के निर्माण में सहायक होती है। न्यूटन ने इसी जिज्ञासा की पूर्ति के क्रम में गुरुत्वाकर्षण की परिकल्पना की गई और इसकी सत्यता की जाँच इनके द्वारा करने के पश्चात गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया।

(5) उपलब्ध सिद्धान्त (Available theory) शोध परिकल्पना के निर्माण में पूर्व के सिद्धान्तों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पूर्व सिद्धान्तों के अनुसंधान से नई समस्या उत्पन्न हो सकती है कि सकी सत्यता जाँचने के लिए परिकल्पना निर्मित किया जा सकता है। अतः पूर्व अनुसंधान परिकल्पना के निर्माण में अत्यन्त उपयोगी होते हैं।

(6) संग्रहित आँकड़े (Collected data) - मनोवैज्ञानिक शोध में संग्रह

को अपनी शोध-समस्या के समाधान के लिए पर्याप्त सूचनाओं का संग्रह करना पड़ता है। ऐसे संग्रहित तथ्यों के अन्तर्गत उस क्षेत्र में हुए पूर्व के शोध-कार्य, संबद्ध शोध-साहित्य, मिलते-जुलते शोधों से प्राप्त तथ्यों तथा शोधकर्ता के अपने अनुभव और रचनात्मक चिन्तन आदि आते हैं। इनके आधार पर पहले एक अनुमानात्मक अवधारणा का निर्माण किया जाता है और पुनः विश्लेषण के आधार पर ऐसी ही औपचारिक परिकल्पना का निर्माण होता है।

2 उपलब्ध शोध-साहित्य (Available research literature) —

परिकल्पना निर्माण का एक मुख्य स्रोत उपलब्ध शोध-साहित्य है। इसके अन्तर्गत शोध से संबंधित पुस्तकों, साहित्य, पूर्व के शोध-संदर्भ, विविध शोध-पत्रिकाएं, जर्नल्स, मोनोग्राफ इत्यादि आते हैं। इनके अध्ययन तथा पुनर्वीक्षण से शोध समस्या के समाधान के लिए परिकल्पनाएं निर्मित की जाती हैं। अतः उपलब्ध साहित्य को परिकल्पना निर्माण का एक महत्वपूर्ण स्रोत माना गया है।

(6) सादृश्यानुमान (Analogy) —

सादृश्य —

Krishna Nand B.A III Hons (3)

नुमान भी परिकल्पना निर्माण का एक प्रमुख स्रोत है। परन्तु सादृश्यानुमान के आधार पर परिकल्पना निर्माण के समय काफी सावधानी की आवश्यकता होती है। कभी कभी सादृश्यानुमान के आधार पर निर्मित परिकल्पना गलत भी साबित होती है।

(9) विशेषज्ञों की राय तथा निर्देश (Expert's opinion and guidance) :— विशेषज्ञों की राय परिकल्पना निर्माण में बहुत सहायक होती है। ये अपने अनुभवों के आधार पर परिकल्पना निर्माण में शोधकर्ता को मदद देते हैं। फलत: नए-नए शोधार्थी के लिए विशेषज्ञ की राय को परिकल्पना निर्माण का अत्यधिक उपयोगी स्रोत माना जाता है।

(10) सांस्कृतिक भिन्नता (Cultural differences) — परिकल्पना निर्माण में समाज की सांस्कृतिक भिन्नता का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि हर समाज की अपनी-अपनी सांस्कृतिक विशेषताएं होती हैं। परिकल्पना निर्मित करते समय सांस्कृतिक भिन्नता या विशेषता

Kaishna Nand B.A III Hon's (4)

पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया गया
है तो परिकल्पना सही नहीं साबित
हो सकती है। इस प्रकार कहा जा
सकता है कि परिकल्पना निर्माण
में सांस्कृतिक भिन्नता ~~कक~~
का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

The End